साम्प्रदायिक तनाव और धार्मिक जुलूसों में कानून-व्यवस्था

प्रसंग (Context):

- उत्तर प्रदेश के कानपुर में *बरावफात* (पैगंबर के जन्मदिवस) के जुलूस के दौरान हिंसा भड़क उठी।
- एक बैनर "I Love Muhammad" लगाने के बाद झड़पें हुईं; इसके बाद **FIR, गिरफ्तारियाँ, इंटरनेट शटडाउन और बुलडोज़र कार्रवाई** (बरेली) देखी गईं।

Paper 1 – समाजशास्त्रीय विश्लेषण

1. धर्म और सामाजिक एकता (Durkheim)

एमिल दुर्खीम ने धर्म को सामाजिक एकजुटता का स्रोत माना, क्योंकि यह साझा विश्वासों और अनुष्ठानों के माध्यम से सामूहिक चेतना (Collective Conscience) को मजबूत करता है।
लेकिन इस लेख में धर्म का **विघटनकारी पहलू** दिखाई देता है।

- **अनुष्ठान के रूप में संघर्ष:** "I Love Muhammad" जैसा पवित्र प्रतीक सामुदायिक पहचान का विवादित चिन्ह बन गया, जिससे एक समेकित धार्मिक क्रिया "सीमा निर्माण" (boundary-making) में बदल गई।
- **अनोमी और नैतिक अव्यवस्था:** साम्प्रदायिक अविश्वास और राज्य की अत्यधिक प्रतिक्रिया नैतिक नियंत्रण के टूटने को दर्शाती है — यह दुर्खीम की "anomie" अवधारणा को प्रतिबिंबित करती है।

सामाजिक कड़ी: जब पवित्र प्रतीक राजनीति का साधन बन जाते हैं, तो धर्म का एकीकृत करने वाला कार्य विघटित होकर सामाजिक विघटन पैदा करता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS OUR COMMITMENT"

---

2. अधिकार और नौकरशाही (Max Weber)

मैक्स वेबर के अनुसार, राज्य की नौकरशाही **कानूनी-तर्कसंगत अधिकार** पर आधारित होती है, परंतु यहाँ इसका प्रयोग पक्षपाती ढंग से हुआ।

- **चयनात्मक प्रवर्तन:** FIRs, बुलडोज़र कार्रवाई और इंटरनेट शटडाउन—ये सभी "कानूनी-तर्कसंगत" कार्यवाही हैं, पर राजनीतिक दबावों के कारण "मूल्य-निरपेक्षता" (value-neutrality) खो गई।
- **करिश्माई राजनीति:** स्थानीय नेता और दक्षिणपंथी समूह धार्मिक करिश्मे का उपयोग कर भावनात्मक लामबंदी करते हैं, जिससे तर्कसंगत-वैधानिक व्यवस्था कमजोर होती है।

परिणाम: राज्य संस्थानों की वैधता में गिरावट और जनता में अविश्वास—वेबेरियन युक्तिसंगठन (rationalization) का संकट।

---

3. शक्ति, विचारधारा और राज्य (Marx)

मार्क्सवादी दृष्टि से राज्य सत्ताधारी वर्ग के हितों की रक्षा करने वाला तंत्र है।

- **बुलडोज़र राजनीति:** राज्य की दमनकारी शक्ति (Repressive State Apparatus – Althusser) का प्रतीक, जो हाशिये के समुदायों पर केंद्रित है।
- **धर्म एक विचारधारा के रूप में:** साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण वर्गीय असमानताओं से ध्यान भटकाता है।
  धर्म यहाँ झूठी चेतना (false consciousness) का उपकरण बन जाता है, जो गरीब वर्गों को वर्गीय एकता के बजाय साम्प्रदायिक विभाजन में उलझा देता है।

---

4. सामाजिक नियंत्रण और विचलन (Merton & Becker)

- **मर्टन का 'Strain Theory':** जब पहचान व्यक्त करने के वैध साधन अवरुद्ध हो जाते हैं, तो लोग विकृत (deviant) माध्यम अपनाते हैं — जैसे उत्तेजक नारों का प्रयोग।
- **बेकर का 'Labelling Theory':** अल्पसंख्यक समुदायों को 'खतरे' के रूप में लेबल किया जाता है, जिससे आत्म-सिद्ध भविष्यवाणी (self-fulfilling prophecy) बनती है।

निष्कर्ष: कानून प्रवर्तन नैतिक लेबलिंग का साधन बन जाता है, जिससे सामाजिक अलगाव और अविश्वास गहराता है।

---

5. मीडिया और नैतिक आतंक (Stanley Cohen)

MENTORA IAS
YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT

- गलत सूचना और सोशल मीडिया पोस्ट "folk devils" बनाते हैं — जिनके खिलाफ समाज नैतिक आतंक में आ जाता है।
- प्रत्येक दंगे के बाद "मोरल पैनिक" बढ़ता है और कठोर राज्य कार्रवाई (जैसे बुलडोज़र न्याय) को वैधता मिलती है।
- यह दर्शाता है कि मीडिया कैसे साम्प्रदायिक रूढ़ियों को मज़बूत करता है।

Paper 2 – भारतीय समाज में अनुप्रयोग

1. साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता

- **साम्प्रदायिकता:** जैसा कि बिपिन चंद्र ने कहा, धर्म का उपयोग सांसारिक (राजनीतिक या आर्थिक) उद्देश्यों के लिए करना।
- धार्मिक जुलूस "राजनीतिक दृश्यता" के लिए प्रतिस्पर्धी साम्प्रदायिकता के मंच बन जाते हैं।
- **धर्मनिरपेक्ष क्षेत्र का संकुचन:** "कानून और व्यवस्था" के नाम पर राज्य संस्थाएँ धार्मिक पक्षपात के उपकरण बन जाती हैं।

यह **योगेंद्र सिंह** की "परंपरा का आधुनिकीकरण" की अवधारणा को दर्शाता है — जहाँ पारंपरिक धार्मिक प्रतीकों को आधुनिक राजनीतिक लामबंदी के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

---

2. राज्य और हाशिए पर समुदाय

- **चयनात्मक पुलिसिंग:** ए.आर. देसाई के अनुसार भारतीय राज्य वर्गीय और साम्प्रदायिक हितों का रक्षक है।
- **अल्पसंख्यक हाशिए पर:** गिरफ्तार महिलाओं और बच्चों की स्थिति **क्रेंशॉ की Intersectionality** को दर्शाती है — जहाँ धर्म, वर्ग और लिंग एक साथ दमन का कारण बनते हैं।
- **इंटरनेट शटडाउन:** वेबर के "Iron Cage" की तरह नियंत्रण का साधन बन जाता है, जो आजीविका और अभिव्यक्ति को सीमित करता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

3. अर्थव्यवस्था और सामाजिक संबंधों पर प्रभाव

- **आर्थिक व्यवधान:** छोटे व्यापारी नुकसान झेलते हैं; यहाँ वेबर के "धर्म और अर्थनीति" संबंध उलट जाते हैं — नैतिक आतंक तर्कसंगत आर्थिक व्यवहार पर हावी हो जाता है।
- **सामाजिक विघटन:** समुदायों के बीच विश्वास टूटता है; पार्सन्स के AGIL मॉडल में "Integration" और "Latency" (नैतिक स्थिरता) असफल होते हैं।

---

4. लिंग और समुदाय

- महिलाओं की पीड़ा सिल्विया वाल्बी के पितृसत्तात्मक ढाँचे को दर्शाती है — राज्य और धर्म दोनों पितृसत्तात्मक संस्थान के रूप में कार्य करते हैं।
- धार्मिक क्षेत्र निर्णय-प्रक्रिया से महिलाओं को बाहर रखते हैं।
- "कानून और व्यवस्था" की भाषा राज्य की पुरुषवादी शक्ति को वैधता देती है।

---

5. नागरिक समाज और प्रतिरोध

- नागरिक समाज का जवाबदेही की माँग करना **ग्राम्शी के प्रतिहेजेमनी (counter-hegemony)** सिद्धांत को दर्शाता है।
- स्थानीय संगठन और धार्मिक नेता संयम की अपील कर **नैतिक विनियमन** और सामाजिक पुनर्निर्माण के कारक बनते हैं।
- यह **हैबरमास के सार्वजनिक क्षेत्र (public sphere)** की अवधारणा से मेल खाता है — जहाँ तर्कसंगत संवाद राज्य के प्रभुत्व और साम्प्रदायिक प्रचार का प्रतिरोध करता है।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"